राज्यपाल सचिवालय, बिहार
(जन–सम्पर्क शाखा)
बिहार लोक भवन, पटना–800022

प्रेस–विज्ञप्ति

संख्या–189/2026

राही मासूम रजा ने हिंदुस्तान की साझा विरासत को अपनी लेखनी में जिया– राज्यपाल

पटना 18 सितम्बर, 2026 :– माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल सय्यद अता हसनैन (सेवानिवृत्त) ने गुरूवार को डॉ० राही मासूम रज़ा की जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर बिहार म्यूजियम, पटना में आयोजित 'पटना सेमिनार' में भाग लिया।

इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राही मासूम रजा शायर, उपन्यासकार और स्क्रीन राइटर थे। साथ ही, वे हिंदुस्तान को समझने और समझाने वाले एक बेहतरीन लेखक थे। उनके शब्द किताबों से निकलकर लोगों की जिंदगी और यादों का हिस्सा बन गए।

उन्होंने कहा कि राही मासूम रजा ने हिन्दुस्तान को आम लोगों की नजर से देखा और लिखा। उनके लेखन में गाँव, घर, परिवार, दोस्ती और रिश्तों की गहरी तस्वीर दिखाई देती है। 'आधा गाँव' में गंगोली सिर्फ कहानी की जगह नहीं है, गाँव खुद कहानी का एक अहम हिस्सा बन जाता है। उन्होंने विभाजन के दर्द को भी आम लोगों के रिश्तों और उनकी जिंदगी के जरिए सामने रखा।

राज्यपाल ने कहा कि राही मासूम रजा की भाषा आम हिंदुस्तानी भाषा थी। उसमें हिंदी, उर्दू, भोजपुरी और बोलचाल के शब्द सहज रूप से मिलते हैं। वे अपनी पहचान के अलग–अलग हिस्सों को साथ लेकर चलते थे। गालिब और मीर के साथ कबीर और तुलसी भी उनकी अपनी विरासत थे। वे खुद को गर्व से 'गंगापुत्र' कहते थे।

राज्यपाल ने राही मासूम रजा के टेलीविजन और सिनेमा में योगदान को भी याद किया। उन्होंने कहा कि वर्ष 1988 में बी० आर० चोपड़ा के 'महाभारत' धारावाहिक के संवादों ने करोड़ों भारतीयों के दिलों में जगह बनाई। 'मैं समय हूँ' जैसे शब्द आज भी लोगों की यादों में बसे हुए हैं। उन्होंने कहा कि गंगोली के एक मुस्लिम लेखक ने महाभारत को करोड़ों भारतीयों के लिए लिखा। उनके लिए यह भारत की अपनी साझा विरासत थी।

राज्यपाल ने कहा कि राही मासूम रजा की जन्म शताब्दी पर उन्हें याद करने के साथ उनकी रचनाओं को नई पीढ़ी तक पहुँचाना भी जरूरी है। युवाओं को 'आधा गाँव' और 'टोपी शुक्ला' जैसे उनके उपन्यास पढ़ने चाहिए। उनकी शायरी, फिल्मों और 'महाभारत' के संवादों को भी समझना चाहिए।

उन्होंने कहा कि पटना की अपनी समृद्ध साहित्यिक और सभ्यतागत विरासत है। ऐसे में राही मासूम रजा को याद करने के लिए पटना एक बहुत उपयुक्त जगह है। राही मासूम रजा ने ऐसे हिंदुस्तान को अपनी लेखनी में जगह दी, जहाँ अलग–अलग धाराएँ अपनी पहचान के साथ साथ बहती हैं। यही हिंदुस्तान उनके जीवन और साहित्य की पहचान रहा।

कार्यक्रम को माननीय विधान पार्षद एवं हमारा समाज दैनिक के संपादक श्री खालिद अनवर, बिहार संग्रहालय के महानिदेशक श्री अंजनी कुमार सिंह, बी०आर०ए० बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के कुलपति प्रो० दिनेश चन्द्र राय, 'माटी' संस्था के संयोजक श्री आसिफ आजमी एवं सुप्रसिद्ध कवि डॉ० विनय कुमार ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम की भी प्रस्तुति हुई।

.....